



दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

बहुध्रुवीय विश्व में भारत की सामरिक स्वायत्तता

बहुध्रुवीय विश्व में भारत की सामरिक स्वायत्तता

सन्दर्भ

- बढ़ती वैश्विक अशांति के बीच, जैसे-जैसे वैश्विक व्यवस्था एकध्रुवीय प्रभुत्व से बहुध्रुवीय जटिलता की ओर बढ़ रही है, रणनीतिक स्वायत्तता की अवधारणा भारत की विदेश नीति के निर्णयों को आकार दे रही है।

रणनीतिक स्वायत्तता क्या है?

- रणनीतिक स्वायत्तता अलगाववाद या तटस्थता नहीं है। यह विदेश नीति और रक्षा क्षेत्र में बाहरी दबावों से मुक्त होकर संप्रभु निर्णय लेने की क्षमता है।
- ऐतिहासिक रूप से भारत के औपनिवेशिक अनुभव और नेहरू की गुटनिरपेक्षता में निहित, यह अवधारणा उत्तरोत्तर सरकारों के अधीन आज के 'बहु-गठबंधन' दृष्टिकोण के रूप में विकसित हुई है - लचीला, व्यावहारिक और राष्ट्रीय हित द्वारा निर्देशित।

भारत की रणनीतिक स्वायत्तता की खोज

- अमेरिका-चीन प्रतिद्वंद्विता और हिंद-प्रशांत तनाव:** जैसे-जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच तनाव बढ़ रहा है, भारत पर पक्ष चुनने का दबाव बढ़ रहा है, और वह कूटनीतिक संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष कर रहा है:
 - भारत क्वाड, आई2यू2 और आईएमईसी का एक प्रमुख सदस्य है जिसका उद्देश्य चीन के प्रभाव का सामना करना है। साथ ही, भारत ब्रिक्स और एससीओ के माध्यम से चीन के साथ जुड़ता है तथा सीमा विवादों पर संवाद बनाए रखता है।
 - चीन एक शीर्ष व्यापारिक साझेदार और प्रमुख क्षेत्रीय शक्ति बना हुआ है।
- रूस का अलगाव और भारत का प्रभाव:** यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद, कई पश्चिमी देशों ने उस पर प्रतिबंध लगा दिए।
 - हालाँकि, भारत ने रूसी तेल और रक्षा उपकरणों का आयात जारी रखा तथा राष्ट्रीय हित का हवाला देते हुए संयुक्त राष्ट्र में रूस की निंदा करने से बचाव किया।
 - इसने रूस के साथ भारत के प्रभाव को बढ़ाया है, जिससे वह पश्चिमी देशों के साथ अपने संबंधों से समझौता किए बिना वैश्विक कूटनीति में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभा सकता है।
- रक्षा और प्रौद्योगिकी साझेदारी:** भारत की रणनीतिक स्वायत्तता उसकी विविध रक्षा खरीद में दिखाई देती है:
 - यह रूस से एस-400 मिसाइल प्रणाली खरीदता है।
 - यह अमेरिका के साथ जेट इंजन और ड्रोन का सह-विकास करता है।
 - यह तेजस लड़ाकू विमानों और आईएनएस विक्रांत जैसे स्वदेशी प्लेटफार्मों में निवेश करता है।
- मध्य पूर्व कूटनीति और वैश्विक दक्षिण नेतृत्व:** गाजा और यूक्रेन जैसे संघर्षों पर भारत के सूक्ष्म दृष्टिकोण सिद्धांत तथा व्यावहारिकता के साथ नेतृत्व करने की उसकी इच्छा को दर्शाते हैं:
 - यह फिलिस्तीन में द्वि-राज्य समाधान का समर्थन करता है, लेकिन इजराइल के साथ सुदूर संबंध बनाए रखता है।
 - यह G20 और BRICS जैसे मंचों पर वैश्विक दक्षिण का समर्थन करता है, और समान विकास और जलवायु न्याय का समर्थन करता है।

- वैश्विक दक्षिण और भारत की आवाज़: भारत ने 2023 में G20 की अध्यक्षता के दौरान स्वयं को वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में स्थापित किया।
- भारत विरासत में मिले पूर्वाग्रहों पर नहीं, बल्कि हितों से प्रेरित साझेदारियों पर बल देता है, जो कई देशों के साथ प्रतिध्वनित होता है, जो सरेखण के बजाय एजेंसी की तलाश करते हैं, जिससे वैश्विक राजनीति में भारत की छवि एक बहुलवादी, संप्रभु ध्रुव के रूप में सुदृढ़ होती है।

एक जुड़े हुए विश्व में स्वायत्ता को पुनर्परिभाषित करना

- आधुनिक समय में सच्ची रणनीतिक स्वायत्ता रक्षा और कूटनीति से कहीं आगे जाती है। इसके लिए आवश्यक है:
 - आर्थिक लचीलापन और तकनीकी आत्मनिर्भरता।
 - साइबर और AI खतरों के सामने डेटा संप्रभुता और डिजिटल सुरक्षा।
 - आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण और महत्वपूर्ण खनिज सुरक्षा।
 - स्वतंत्र निर्णय लेने की प्रक्रिया को बनाए रखने के लिए घरेलू राजनीतिक सामंजस्य और संस्थागत मजबूती समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

- भारत के लिए, रणनीतिक स्वायत्ता का अर्थ है बिना निर्भरता के साझेदारी करना, बिना उकसावे के रोकना और बिना किसी एजेंसी को छोड़े संलग्न होना।
- भारत अमेरिका, चीन और रूस के साथ संबंधों को संभालने में एक नाजुक मोड़ पर चल रहा है।
- लेकिन ऐसा करके, वह एक सभ्यतागत शक्ति के रूप में अपना स्थान पुनः प्राप्त करता है - एक अशांत विश्व में अकेला नहीं, बल्कि मजबूत, लचीला और आत्मविश्वास से भरा हुआ।

Source: TH

दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

प्रश्न: तीव्रता से विकसित हो रहे बहुध्रुवीय विश्व के संदर्भ में, भारत अपने वैश्विक प्रभाव और राष्ट्रीय हितों से समझौता किए बिना अपनी सामरिक स्वायत्ता को किस सीमा तक बनाए रख सकता है?